

सृजन

वार्षिक पत्र, हिंदी विभाग सेंट बिड्स महाविद्यालय शिमला

संस्करण : 5

वर्ष-2022

सृजनात्मकता : संसार की गतिशीलता के लिए ज़रूरी

सृजन सृष्टि का आदि एवं कारक तत्त्व है, जो काल की गतिशीलता को बनाए रखता है। सृजनात्मकता के कारण ही संसार के सभी कार्य - कलाप निरंतर चलते रहते हैं। ईश्वर ने अनादिकाल से पर्वत, नदी, वृक्ष, फूल, जीव -जंतुओं आदि का सृजन कर जीवन की धारा को आगे बढ़ाया। नारी जब शिशु को जन्म देती है तो समूचा घर किलकारियों से गूँज उठता है। यह सृजन का उत्तम स्वरूप होता है। हमारे मनीषियों ने वेद-वेदांगों का सृजन किया तो ज्ञान के अक्षुण्ण प्रकाश से अज्ञानता का अन्धकार धीरे-धीरे छंटता चला गया। अनंत काल से जीवन के हर क्षेत्र में सृजन होता आ रहा है। साहित्य के क्षेत्र में भी देखें तो अपनी सृजन - शक्ति एवं कलम के माध्यम से रचनाकारों ने इस संसार को बेहतर बनाने हेतु अनेक सन्देश भेजे हैं। साहित्य का पर्याय ही सृजन है। हर व्यक्ति में यह सृजन-शक्ति किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है। ज़रूरत है उसे पहचानने की, पहचानकर उसे निखारने की, निखारकर उसे आम जन के बीच आत्मसात करने योग्य बनाने की। इसी सृजनात्मक कौशल को विकसित करने के उद्देश्य से प्रति वर्ष सेंट बीड्स महाविद्यालय की छात्राओं को अनगिनत गतिविधियों में भाग लेने का सुअवसर प्रदान किया जाता है। इस साल भी महाविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से कई गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनमें छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। उनकी कलात्मकता एवं सृजनात्मकता को उभारने के लिए उन्हें अलग-अलग अवसरों पर लेखन कार्य, पेंटिंग, पोस्टर-डिज़ाइन, फ़ोटोग्राफी, साक्षात्कार, गायन प्रस्तुति आदि में सक्रियता के साथ भाग लेने के लिए पाठ्यपत्रिकाओं द्वारा प्रेरित किया

गया। सत्र 2021-22 के बीच हिंदी विभाग द्वारा आयोजित सभी गतिविधियों में जिन छात्राओं ने भाग लिया, उनकी प्रस्तुति इस वार्षिक पत्र में आपके समक्ष है। साथ ही गतिविधियों का संक्षिप्त वर्णन, फ़ोटो सहित प्रस्तुत किया गया है। आशा है कि सभी पाठक पत्र को पढ़ते हुए इनसे अवगत भी होंगे एवं छात्राओं के सृजनात्मक कौशल और प्रयासों को सराहेंगे। धन्यवाद!

सुश्री तन्वी अग्रवाल
बी.ए. तृतीय वर्ष
(छात्र सम्पादिका)



एक छात्र की दृष्टि में आज़ादी का महत्त्व

हमारे देश को आज़ाद हुए 75 साल होने वाले हैं, परन्तु ये 75 साल केवल आज़ादी का जश्न मनाने के नहीं, बल्कि हमारे उन स्वतंत्रता सेनानियों के देश के प्रति बलिदान को याद करने के भी हैं। उन आज़ादी के दीवानों की बदौलत ही आज हम स्वतंत्र भारत के नागरिक कहलाते हैं। हमारे वीरों के बलिदान ने कितना कुछ बदल दिया, आज हम खुली हवा में साँस ले पा रहे हैं, बिना किसी रोक - टोक के घूम पा रहे हैं। अब कम से कम अपने मौलिक अधिकारों के स्वामी तो हैं, अपने विचारों को व्यक्त करना अब एक अपराध नहीं। इन लगभग 75 वर्षों में देश में बहुत बदलाव आया।

भारत ने अनेक ऊंचाइयों को छुआ। परमाणु शक्ति - संपन्न देश बनने के साथ -साथ अंतरिक्ष विज्ञान, तकनीकी विज्ञान, कृषि, साहित्य तथा खेल - कूद आदि क्षेत्रों में भी भारत ने अपना झण्डा लहराया है। इन वर्षों में भारत ने अपने सेना बल को भी मज़बूत किया है।

चाहे जितनी भी सुख - सुविधाएँ प्रदान की जाएँ, आज़ादी की हवा में खुल कर साँस लेने से सुखद एहसास और कोई नहीं। एक पंछी को भी सोने के पिंजरे में बंद कर, दाना खिलाने से संतुष्ट नहीं किया जा सकता। सारी सुख - संपत्ति बिना आज़ादी के व्यर्थ हैं। आज़ादी प्राप्ति का यह सफ़र आसान नहीं था। आज़ादी प्राप्त करते - करते तिरंगा फहराने के साथ - साथ देश का विभाजन भी हुआ। इस दौरान कई मासूम जानें गईं। आज भले ही हम आज़ाद भारत के नागरिक कहलाएँ, परन्तु कुछ घाव अभी भी भरे नहीं हैं। हमें गरीबी, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, अन्धविश्वास, जाति - भेद, साम्प्रदायिक अलगाव तथा लैंगिक भेद - भाव जैसी अनेक बेड़ियों ने अभी भी जकड़ कर रखा है। जब तक हम इन बेड़ियों को तोड़ न दें, तब तक हम पूर्णतः आज़ाद नहीं कहलाएँगे। आज़ादी की जंग अभी भी जारी है...

सुश्री दीपांजलि शर्मा

बी.ए. प्रथम वर्ष

'छप्पन तोले का करधन' एक आकलन

जब 1947 में देश आज़ाद हुआ था तब अंग्रेजों से तो देश आज़ाद हो गया किन्तु गरीबी, पिछड़ी मानसिकता, पूंजीवाद से नहीं। इसी तरह की परिस्थिति का वर्णन उदय प्रकाश जी ने अपनी रचना 'छप्पन तोले का करधन' में किया है। यह कहानी मध्यवर्ग के इर्द - गिर्द घूमती है जिसकी स्थिति आज़ादी के बाद बिगड़ती ही गई। इसमें घर की ऐसी स्थिति को दर्शाया गया है जिसकी छत गिरने वाली है और दीवारें खोखली हैं। घर में हमेशा किसी सड़ी हुई चीज़ की बदबू आती रहती है। इस कहानी का वाचक एक छोटा बच्चा है जिसके अतिरिक्त घर में उसके माता - पिता, चाचा - चाची, बुआ और दादी हैं ये सभी लोग घर की स्थिति पर सोच- विचार नहीं करते, इसके विपरीत सभी लोग प्रतिदिन बूढ़ी दादी के सोने के करधन के लालच में डूबे रहते हैं घर के सभी लोगों को लगता है कि करधन दादी के पास है दादी यह बताने के लिए तैयार ही नहीं है कि करधन कहाँ है।

घर में बूढ़ी दादी की स्थिति दयनीय है। जब वह बीमार पड़ जाती है तो पूरे परिवार में कोई भी उनका ख्याल रखने वाला नहीं होता और न ही कोई खाना देता है। दादी चुपचाप बंद कमरे में पड़ी रहती है जिसे सभी लोग अंधियारी कोठरी बुलाते हैं और जब दादी कई दिनों तक बाहर नहीं आती तो वे लोग घर के छोटे बच्चे को यह देखने



भेजते हैं कि वह जिन्दा भी है या मर गई। इस बच्चे के मन में घर के सभी लोगों ने दादी के प्रति ऐसी धारणा बना दी है कि उसे लगता है दादी उनकी शत्रु है, क्योंकि दादी उन्हें करधन नहीं दे रही है। इस घर की औरतों को भी दादी से कोई संवेदना नहीं है, बल्कि वे हमेशा इस कोशिश में लगी रहती हैं कि कैसे उन्हें करधन का पता चले। वे उन्हें ताना सुनाती रहती हैं और कई दिनों तक खाना नहीं देतीं। अपने ही घर में दादी की स्थिति इतनी दयनीय थी कि जब वे अपने जीवन की अंतिम सांसें ले रही थीं, मृत्यु के बिल्कुल करीब थीं तब भी घर के लोगों को करधन की ही पड़ी थी। दादी की मृत्यु के पश्चात् घर वालों ने पूरा घर छान मारा, दीवारें खोद डालीं पर फिर भी उन्हें करधन नहीं मिला क्योंकि करधन था ही नहीं। दादा जी ने मरने से पहले दादी को 10 तोला सोना दिया था जो कि दादी ने अपने बच्चों पर खर्च कर दिया था लेकिन इसके बावजूद दादी को अपने ही घर में झूठ बोल कर जीना पड़ता है क्योंकि वे जानती थीं कि यदि घरवालों को पता चल गया कि उनके पास कोई करधन नहीं है तो उनका जीवित रहना मुश्किल हो जाएगा। यह कहानी हमें सोचने पर मजबूर कर देती है कि किस प्रकार से एक बच्चे पर उसके परिवार का प्रभाव पड़ता है और किस प्रकार मनुष्य लालच में इतना अंधा हो जाता है कि उसे रिश्ते - नाते, सही - गलत का अंतर भी मालूम नहीं पड़ता।

नाम - दिव्यांशी डमसेठ

कक्षा - बी. ए. द्वितीय वर्ष

अनकमांक - 201030

दहेज प्रथा

दहेज प्रथा समाज के लिए अभिशाप है। भारतीय नारी के सम्मान को सबसे अधिक आघात पहुँचानेवाली समस्या दहेज प्रथा है। भारतीय महापुरुषों ने धर्म - ग्रन्थों में नारी की महिमा में बड़े सुन्दर-सुन्दर वाक्य रचे हैं। किंतु दहेज ने इन सभी कीर्तिमानों को उपहास के पात्र बना दिया है। आज पुत्रों की कामना करनेवाले लोग गर्भ में ही कन्याओं की हत्या करा देने का महापाप कर रहे हैं। आज दहेज कन्या के लिए पति - प्राप्ति की फ़ीज़ बन गया है! दहेज के लालची बहुओं को जीवित जला रहे हैं, फाँसी पर चढ़ा रहे हैं। समाज के धनी लोगों ने अपनी कन्याओं के विवाह में धन के प्रदर्शन की जो कुत्सित परम्परा चला दी, वह दहेज की आग में घी डालने का काम कर रही है। इस प्रथा की बलि - वेदी पर न जाने कितने कन्या - कुसुम चढ़ चुके हैं। लाखों परिवारों के जीवन की शांति को नष्ट करने और मानव की सच्चरित्रता को मिटाने का अपराध इस प्रथा ने किया है। इस कुरीति से मुक्ति का उपाय क्या है? इसके दो पक्ष माने जाते हैं - जनता और प्रशासन। प्रशासन कानून बनाकर इसे समाप्त कर सकता है और कर भी रहा है। किन्तु बिना -जन सहयोग के कानून फलदायक नहीं हो सकता है। इसलिए महिला वर्ग को स्वयं संघर्षशील बनना होगा, स्वावलम्बी बनना होगा। ऐसे घरों का तिरस्कार करना होगा जो उन्हें केवल धन -प्राप्ति का साधन मात्र समझते हैं। हमारी सरकार ने दहेज - विरोधी कानून बनाकर इस कुरी -ति के उन्मूलन की चेष्टा की है। लेकिन वर्तमान दहेज कानून में अनेक कमियाँ हैं। इसे कठोर बनाया जाना चाहिए। किसी भी दिन का अगर हम समाचार पत्र उठाकर देख लें तो वधु - दहन के दो - चार समाचार अवश्य देखने को मिलते हैं। इस प्रथा को रोकने के उद्देश्य से वर्ष 1961 में एक कानून लागू किया गया था, फिर 1986 में इसे पुनः संशोधित किया गया था, ताकि उसे और प्रभावशाली बना या जा सके। इस अधिनियम के तहत दहेज लेने या देने के लिए प्रेरित करने वाले व्यक्ति को कम से कम 5 वर्ष का कारावास या न्यूनतम 15,000 रुपए जुर्माना चुकाने का आर्थिक दण्ड न्यायालय द्वारा दिया जाता है। जनता और प्रशासन दोनों को ही इस दिशा में सक्रिय होना चाहिए और इस सामाजिक कलंक को समाप्त कर देना चाहिए।

सुश्री अरुषी शर्मा
बी. ए. (हिंदी)
द्वितीय वर्ष



इंसानियत का क़त्ल

आज क्यों इंसान अपने रुतबे के चलते इतना क्रूर है?
जिसे देखो, यहाँ नफ़रत और हिंसा के नशे में चूर है।
शक्ति - प्रदर्शन का ऐसा जुनून है_
के बहाया जा रहा कई मासूम लोगों का खून है।
छीना जा रहा है किसी से उसका बेटा, किसी से पिता,
किसी से उसका भाई है।
फिर क्यों हर जगह मनुष्य ने मचा रखी तबाही है?
कई लोगों से घर छिन गया, कुछ भूख -प्यास से मर गए।
भगवान ने कभी ना सोचा होगा, जो मनुष्य सब कर गए ...।
पड़ रहे सर्वत्र जान और खान-पान के लाले हैं,
फिर क्यों इंसानियत का क़त्ल कर इंसान ने सबके प्राण संकट में डाले हैं? है वक्त अभी भी, हे मानव!
रोक सकता है
तू इस तबाही को एकता और प्रेम से रहकर,
सुलझाओ मसलों को,
छोड़ दो लड़ाई को
छोड़ दो लड़ाई को।

सुश्री रिदम सूद
बी .कॉम. (हिंदी)
द्वितीय वर्ष

काश ! कहीं ऐसी जगह हो, कभी यूँ भी तो हो, कि खुद जिएँ और दूसरों को जीने दें !

कहीं किसी जगह, इसी दुनिया में, एक ऐसी दुनिया बनाएँ, जहाँ क्या सही, क्या गलत? यह तय करने वाले लोगों का मापदंड न हो। जहाँ कोई किसी के वजूद को इस बात से न आंके कि उसके बैंक में कितना जमा है? मकान कैसा है? गाड़ी कैसी है? रंग -रूप कैसा है? ज़िंदगी जीने में खर्च हो, न कि ज़िंदगी सिर्फ़ साँस लेने में खर्च हो जाए...।

जहाँ कोई रेस में न भागे, कोई रेस ही न हो, हर किसी का सफ़र अलग है, अद्वितीय है ! फिर कैसी तुलना किसी और से? एहसास सब अपना-अपना कर्म करें, बस इस बात का एहसास रहे, ख्याल रहे कि हम किसी के जीने में बाधा न बने, बस इतना ही कर पाएँ वह भी बहुत है।

ऐसी जगह हो जहाँ सुकून हो, शांति हो, ज़िंदगी हो, जहाँ ज़िंदगी जीने की आपाधापी न हो, बल्कि ज़िंदगी जीने की ललक हो। हर पल हर लम्हा, जहाँ साँसों की धड़कनों से हो रही गुफ्तगू भी सुनाई दे, जब हवा छूकर गुज़रे तो वह रूह तक में ताज़गी भर दे, एहसास दे जाए कि हम ज़िंदा हैं, कि हम बाकी हैं।...

कितना अच्छा हो अगर वक्त ज़िंदगी को और खूबसूरत, और संवारने, और जीने में गुज़रे, खुद को प्यार करें, खुद की कद्र करें, न कि किसी और पर निर्भर होना पड़े। कोई और तय करे भी क्यों, क्या सही क्या गलत हमारे लिए, या हम तय करें दूसरों के लिए? किसी के काम आ पाएँ तो अच्छा, अगर न भी आ पाएँ तब भी अच्छा, बस हम दूसरों के जीवन में खलल न डालें।

ज़िंदगी में मकसद होना अच्छा है, होना चाहिए, लेकिन अगर न भी हो, तो भी जीना ही अपने आप में बहुत अहम हो। मगर ऐसी जगह न यहाँ देखी, न वहाँ देखी। कभी खुद के लिए बना पाऊँ तो, लेकिन तब तक के लिए यही कहना सही होगा, शायद सबको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त, लेकिन दिल बहलाने को ग़ालिब , ये ख्याल अच्छा है!

महिला सशक्तिकरण के बारे में जानने से पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि हम 'सशक्तिकरण' से क्या समझते हैं। 'सशक्तिकरण' से तात्पर्य है - किसी व्यक्ति की योग्यता देखना, जिसमें वह अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। इस लेख में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं, जहाँ महिलाएँ परिवार और समाज से मुक्त होकर अपने निर्णयों के निर्माता खुद होती हैं। धर्म ग्रंथों में नारी के महत्त्व को मानते हुए यहाँ तक बताया गया है कि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का वास होता है। आज हम लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था में जी रहे हैं, वह सभी को समानता का अधिकार देती है। इसलिए कहा जा सकता है कि यह दुनिया जितनी पुरुषों की है, उस पर महिलाओं का भी उतना ही हक़ है। विश्व राजनीति में जहाँ कभी सिर्फ़ पुरुषों का दबदबा हुआ करता था, वहीं अब महिलाओं ने भी अपने कदम इस क्षेत्र में रखकर साबित कर दिया कि वे किसी से कम नहीं हैं। यदि विश्व राजनीति पर नज़र डाली जाए, तो महिलाओं में जर्मनी की चांसलर, 'एंजेला मर्केल' पहले स्थान पर हैं। इसके अलावा ब्रिटेन की प्रधान मंत्री, 'थेरेसा मे' भी एक ऐसी ही प्रभावशाली महिला रहीं। अगर हम भारत की बात करें तो देश की प्रधान मंत्री रह चुकीं 'इंदिरा गांधी' के साथ-साथ, भारत के विदेश मंत्रालय का कार्यभार संभालने वाली 'सुष्मा स्वराज' भी एक ऐसी ही ओजस्वी वक्ता एवं कुशल नेत्री थीं। सालों से बड़े वैश्विक संस्थाओं को महिलाएँ संभाल रही हैं। यही नहीं, उन्होंने इन संस्थाओं को तरक्की की राह पर आगे बढ़ाया भी है। 'पेप्सि को' की सीईओ, इन्द्रा नूई हो या फिर आईसीआईसीआई बैंक की सीईओ, चंदा कोचर, व्यापार एवं उद्यम के क्षेत्र में भी महिलाएँ तेज़ी से उभर रही हैं। एक अध्ययन के अनुसार, 60 प्रतिशत पुरुष अपने विकास के लिए कंपनी पर निर्भर रहते हैं,

जबकि 49 प्रतिशत महिलाएँ पूरी तरह से कंपनी पर निर्भर नहीं रहती हैं।

महिलाएँ पुरुषों से कई मामलों में बेहतर होती हैं क्योंकि वे हमेशा तुरंत प्रतिक्रिया देने की बजाय सामने वाले को ठीक से सुनती हैं और उसी अनुसार उनकी परेशानी दूर करने की कोशिश भी करती हैं। महिलाएँ शुरू से दूसरों की ताकत और कमजोरी भी अच्छे से पहचान जाती हैं। भारतीय समाज में देखा जाए तो महिलाओं को सम्मान देने के लिए माँ, बहन, पुत्री, पत्नी आदि के रूप में उन्हें पूजने की परंपरा है, लेकिन आज केवल यह एक ढोंग ही रह गया है।

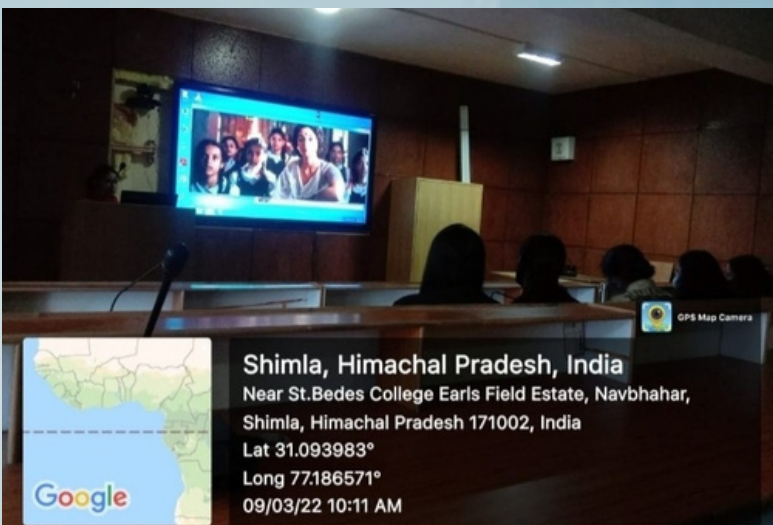
महिला सशक्तिकरण महिलाओं को मज़बूती प्रदान करता है, जो उन्हें उनके हक के लिए लड़ने में मदद करता है। हम सभी को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, उन्हें आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए। इक्कीसवीं सदी नारी जीवन में सुखद सम्भावनाओं की सदी है। महिलाएँ अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी हैं। यह एक सुखद संकेत है। लोगों की सोच बदल रही है, फिर भी इस दिशा में और भी प्रयास करने की आवश्यकता है।

सुश्री अरुषी शर्मा
बी. ए. (हिन्दी)
द्वितीय वर्ष

फ़िल्म समीक्षा

'गंगूबाई काठियावाड़ी' : हाशिये के स्त्री समाज की व्यथा बयान करती फ़िल्म

हिंदी सिनेमा में प्रायः जीवन चरित्र पर आधारित फ़िल्में बहुत पसंद की जाती हैं। इसी ट्रेंड को बरकरार रखने के लिए 'गंगूबाई काठियावाड़ी' फ़िल्म बड़े परदे पर लाई गई है। आलिया भट्ट ने गंगूबाई की भूमिका निभाई है। गंगूबाई को 'गंगूबाई काठियावाड़ी' या 'गंगूबाई कोठेवाली' भी कहा जाता है। गंगा का प्रेमी फ़िल्म जगत में नाम बनाने का झाँसा देकर उसे घर से बहुत दूर ले जाता है, जहाँ वह उसे मात्र हज़ार रुपए में बेच देता है। जब वह वैश्या के रूप में पहली बार काम करती है तभी से उसका नाम गंगूबाई पड़ जाता है। काठियावाड़ आकर उसका फ़िल्म जगत में काम करने और नाम कमाने का सपना चूर-चूर हो जाता है। वैश्यालय की साहिबा के साथ-साथ वह सामाजिक कार्यकर्ता भी बन जाती है, जहाँ वह काठियावाड़ के लोगों के अधिकार के लिए लड़ती है। यह सरल, भावों से परिपूर्ण, सीधा-सादा घटना क्रम है। ना कोई लड़ाई-झगड़ा, ना कोई तोड़-मरोड़। संजय लीला भंसाली की बाकी फ़िल्मों, जैसे कि 'पद्मावत', 'बाजीराव मस्तानी' की तुलना में यह सर्वोत्तम नहीं है! भले ही आलिया भट्ट ने इसमें अपनी भूमिका बहुत अच्छे से निभाई लेकिन कुछ जगहों पर भावों की कमी थी। चाहे आलिया भट्ट का नाम फ़िल्म जगत में अच्छा चलता हो लेकिन, अगर किसी दूसरी अभिनेत्री जैसे की 'विद्या बालन' (डर्टी पिचर) को यह किरदार दिया जाता तो बहुत अच्छा होता। फ़िल्म में कुछ संवाद बहुत ही अच्छे हैं जैसे कि 'कुंवारी आपने रहने नहीं दिया और श्रीमती बनाया नहीं', 'आपकी इज़्ज़त तो एक बार गई हमारी तो रोज़ जाती है, लेकिन खत्म ही नहीं होती', 'क्या माँ का नाम काफ़ी नहीं!' 'क्या स्त्री के लिए पुरुष का वजूद होना काफ़ी है, क्या उनके बच्चे को स्कूल जाने का अधिकार नहीं है?'



दूसरी तरफ़ जहाँ काठियावाड़ के लोगों को साफ़ - सुथरा दिखाया गया है और उसके आस -पास के इलाकों, स्कूलों को गलत बताया है, यह प्रश्रीय है।

गाने भी ठीक-ठाक हैं। कुल मिलाकर कहा जाए तो यह फ़िल्म गंगूबाई के संघर्ष की कहानी है, जिसमें वह पूरी फ़िल्म में अपने अधिकार और सम्मान के लिए लड़ती नज़र आई है। अगर आप संजय लीला भंसाली आलिया भट्ट के फ़ैन है और जीवनी को पसंद करते हैं, तो देख सकते हैं, लेकिन देखा जाना चाहिए यह अनिवार्य नहीं।

सुश्री-नेहा
बी.ए (हिंदी)
तृतीय वर्ष



समय का सदुपयोग

**'कल करे सो आज कर, आज करे सो अब
पल में परलय होयगी, बहुरि करोगे कब?'**

समय वह अमूल्य धन है जिसे भगवान ने हर जीवित प्राणी को उपहार स्वरूप दिया है। भगवान के दिये हुए इस वरदान का बुद्धिमान एवं परिश्रमी इंसान उपयोग करते हैं और आलसी व्यर्थ गंवा देते हैं। समय का पहिया सदैव चलता रहता है। गया हुआ वक्त कभी वापस नहीं आता। उसका उपयोग करना सीखना ही उन्नति की कुंजी है। एक कहावत भी है- 'गया वक्त कभी हाथ नहीं आता।'

समय का सदुपयोग करते हुए प्रत्येक कार्य को करने का समय निश्चित करना चाहिए। अगर हम सब काम समय पर कर लें तो पाएंगे कि हमारा जीवन कितना सुखद, शान्त और व्यवस्थित है। हमें कभी पछताना नहीं पड़ेगा। जो व्यक्ति समय का महत्व नहीं समझते, बेकार गप्पे मारते हैं, इधर-उधर घूमते हैं, योजनाबद्ध तरीके से काम नहीं करते, वे जीवन की दौड़ में पिछड़ जाते हैं। उनका कोई काम समय पर पूरा नहीं होता। समय सूखी रेत की तरह हाथ से फिसल जाता है और वह हाथ मलते रह जाते हैं। समय निकल जाने के बाद हम कुछ नहीं कर सकते। तुलसीदास ने कहा है, 'का वर्षा जब कृषि सुखानी' अर्थात् खेती सूखने के बाद वर्षा का कोई महत्त्व नहीं होता। इसी प्रकार समय निकलने के बाद हम कुछ नहीं कर सकते। इसलिए हमें अपना हर काम समय पर समाप्त कर लेना चाहिए।

संसार के जितने भी महान व्यक्तियों से हम परिचित हैं,

अपना हर काम समय पर समाप्त कर लेना चाहिए। संसार के जितने भी महान व्यक्तियों से हम परिचित हैं, उनकी जीवनचर्या बताती है कि वे समय का मूल्य समझते थे। उन्होंने जीवन के प्रत्येक पल का उपयोग किया और समय ने उनको पूरा सम्मान दिया।

निष्कर्ष :

जो व्यक्ति समय का सही उपयोग करता है वह व्यक्ति सफलता हासिल कर लेता है और जो व्यक्ति समय का दुरुपयोग करता है, वह जीवन में सबसे पीछे रह जाता है, जो समय के महत्त्व को नहीं समझ पाया, वह जीवन में कभी सफल नहीं होता है।

सुश्री -शिखा शांडिल

बी.ए .(हिंदी)

द्वितीय वर्ष



'मलबे का मालिक' : सांप्रदायिक विद्वेष का जीवंत साक्ष्य

'मलबे का मालिक' प्रसिद्ध नाटककार और कथाकार, मोहन राकेश द्वारा रचित कहानी है। मोहन राकेश हिन्दी के प्रख्यात लेखकों में से एक हैं। 'मलबे का मालिक' उनकी एक लोकप्रिय कहानी है। यह कहानी 1956 ई. में प्रकाशित हुई। यह कहानी भारत विभाजन की त्रासदी पर आधारित है। इस कहानी के माध्यम से दर्शाया गया है कि विभाजन व युद्ध से आम लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है व कैसे मानवीय मूल्य छिन्न-भिन्न होकर रह जाते हैं।

1947 में हिन्दुस्तान का विभाजन और पाकिस्तान का गठन हुआ था। सांप्रदायिक दंगों के कारण मुसलमानों को भारत छोड़कर पाकिस्तान जाना पड़ा और हिन्दुओं को पाकिस्तान छोड़कर भारत आना पड़ा था। कहानी की शुरूआत में भी कुछ ऐसा ही देखने को मिलता है। कुछ मुसलमान, जो पहले अमृतसर में रहते थे, वे आज विभाजन के साढ़े सात साल बाद लाहौर से भारत और पाकिस्तान के बीच हॉकी का मैच देखने अमृतसर वापस आए हैं। हॉकी का मैच तो महज़ एक बहाना था, असल में ज़्यादा चाव तो उन्हें उन घरों और बाज़ारों को देखने का है जो उनके लिए अब पराए हो गए हैं। मुसलमानों की टोली जिस रास्ते से होकर गुज़रती है, शहर के लोग उत्सुकतापूर्वक उन्हें देखते हैं। कुछ लोग आशंकित होकर रास्ते से हट जाते हैं तो कुछ उनसे मिलनसार होकर पाकिस्तान का हाल पूछते हैं। इन्हीं विस्थापितों में एक दुबला - पतला बूढ़ा व गरीब मुसलमान है - अब्दुल गनी। वह पहले अमृतसर में ही रहता था। उसका बेटा चिरागदीन वहाँ का दर्ज़ी हुआ करता था। गनी विभाजन से पहले ही लाहौर चला गया था, परन्तु उसका बेटा, बहू व दो पोतियाँ अमृतसर में ही थे। गनी बाज़ार बांसा में अपना पुराना मकान देखने आया था। उसे रास्ते में एक नवयुवक, मनौरी पहचान लेता है और उसे उसके मकान की ओर ले जाता है। परन्तु गनी का शानदार घर आज मलबे में तबदील हो गया था। वहाँ पर बचा था सिर्फ़ राख, धूल और कण। यह देखकर गनी की आँखें फटी की फटी रह जाती हैं। उसका गला सूख जाता है और वह कह उठता है "यह रह गया है, यह ?" फिर वह जली हुई चौखट को पकड़कर वहीं बैठ जाता है। सारे मोहल्ले के लोग गनी को देखकर यह अनुभव कर रहे थे कि मलबे को देखकर उस दिन की सारी घटना खुल जाएगी,

कैसे रक्खे पहलवान ने चिराग को घर से बाहर बुलाया और उसकी जान ले ली। उसकी बीबी जुबेदा, दोनों बेटियों व सुल्ताना को भी उसने मार डाला था। रक्खे की नज़र तो चिराग के नए मकान पर थी पर किसी ने मकान को आग लगा दी थी और तब से रक्खा उस मलबे व ज़मीन को अपनी जायदाद समझता आ रहा है। इस समय रक्खा पहलवान पीपल के नीचे सो रहा था, तभी उसे लच्छे पहलवान ने बताया कि अब्दुल गनी आया है और अपने मलबे पर बैठा हुआ है। इतने में रक्खे ने देखा कि मनौरी गनी की बाँह पकड़कर उसी की ओर आ रहा है। रक्खे के पास पहुँचते ही गनी उसे सम्बोधित करता है और अपना परिचय दोहराता है। वह रक्खे के सामने अपने बेटे और बच्चों को याद कर रोने लगता है। गनी इतना भोला है कि उसे यह पता भी नहीं चलता कि उसी रक्खे ने ही उसकी दुनिया उजाड़ दी थी। गनी अपने मकान के मलबे को देखकर तसल्ली कर वापस लौट जाता है। कहानी के अंत में रक्खा पहलवान रोज़ की तरह मलबे को अपनी जायदाद समझकर वहाँ बैठ जाता है। परन्तु एक कुत्ता आकर भौंककर उसे वहाँ से भगा देता है और वह कुत्ता मलबे पर कोने में बैठकर गुरगुराने लगता है।

अतः इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने सांप्रदायिक विद्वेष के चलते दंगों तथा देश के विभाजन का दुष्परिणाम दर्शाया है, जिसके कारण मानवता का पतन होता है, आपसी सौहार्द और भाईचारा दम तोड़ देता है।

सुश्री अंजलि वर्मा
बी. ए. द्वितीय वर्ष



साक्षात्कार

सेंट बीड्स महाविद्यालय के पुस्तकालय में छात्राओं को लाभान्वित करने के लिए विभिन्न

विषयों से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों का भण्डार है। इन पुस्तकों तथा अन्य पाठ्य सामग्रियों के रख-रखाव तथा उनकी विशेषताओं के सम्बन्ध में बी.ए. तृतीय वर्ष (जी.ई. हिंदी) की छात्रा, सुश्री साक्षी ठाकुर द्वारा दिनांक 17 मार्च 2022 को पुस्तकालय की अध्यक्ष, श्रीमती रुचि आज़ाद का साक्षात्कार लिया गया। उनके बीच हुई चर्चा के विशेष अंश प्रस्तुत हैं -

साक्षी ठाकुर (स.ठ.) : महोदया कृपया अपना परिचय दें?

रुचि आज़ाद (रु.आ.) : मेरा नाम रुचि आज़ाद है। मैं सेंट बीड्स महाविद्यालय में पुस्तकालय की अध्यक्षा हूँ। मैं सन 2006 में इस पद पर नियुक्त हुई थी। सन 2006 से अभी तक मुझे यहाँ काम करते हुए 15 वर्ष से भी अधिक समय हो गया है।

स.ठ. : सेंट बीड्स महाविद्यालय में पुस्तकालय की स्थापना कब हुई थी?

रु.आ. : सेंट बीड्स में पुस्तकालय की स्थापना सन 1964 में हुई थी।

स.ठ. : पुस्तकालय में किन-किन विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं?

रु.आ. : पुस्तकालय में सभी विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। कॉलेज में जितने भी कोर्सेज़ हैं, उन सभी से सम्बन्धित पुस्तकें इस पुस्तकालय में उपलब्ध हैं, जैसे विज्ञान की हर विषय की पुस्तकें, कंप्यूटर विज्ञान की, मानविकी विषय की, साहित्य, सामान्य ज्ञान, कल्पना आधारित, तथ्यों पर आधारित, इतिहास, भूगोल आदि विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त जीवनी और आत्मकथा पर आधारित पुस्तकें भी पुस्तकालय में उपलब्ध हैं जिनका सभी पाठक अपनी-अपनी रुचि के अनुसार लाभ उठा सकते हैं।

स.ठ. : पुस्तकालय में पुस्तकों के अतिरिक्त और कौन-कौन सी पठन सामग्री है?

रु.आ. : पुस्तकालय में पुस्तकों के अतिरिक्त बहुत सी पठन सामग्री उपलब्ध है जैसे - पत्र - पत्रिका, दैनिकी के साथ साथ अभिलेख भी हैं। पुस्तकालय में अभिलेखागार अनुभाग है। इस में इतनी प्राचीन पुस्तकें हैं कि कॉलेज के बाहर से भी विद्यार्थी अनुसंधान कार्य के लिए आते हैं। अभिलेखागार में अनुसंधान कार्य से संबंधित बहुत अच्छी पठन सामग्रियाँ हैं। यहाँ से अन्तर्पुस्तकालयी ऋण के लिए भी पुस्तकें वितरित की जाती हैं।

स.ठ. : क्या पुस्तकालय में पुस्तक अधिकोष (बुक बैंक) है?

रु.आ. : जी हाँ, पुस्तकालय में पुस्तक अधिकोष है। हमारे पुस्तकालय का पुस्तक अधिकोष कॉलेज की छात्राओं के माध्यम से चलता है। पुस्तक अधिकोष से पुस्तकें वितरित करवाने हेतु सप्ताह में दो दिन हैं - मंगलवार और शुक्रवार। ये दो दिन छात्राएँ दोपहर में 2:00 बजे आकर पुस्तकें वितरित करवा सकती हैं जिसके लिए उन्हें 100रु सिक्कोरिटी मनी के तौर पर देना पड़ता है और जिस दिन छात्राएँ पुस्तकें वापिस लौटाती हैं उस दिन उन्हें सिक्कोरिटी मनी लौटा दिया जाता है। पुस्तक अधिकोष छात्राओं के लिए बहुत ही लाभदायक है, जैसे कुछ छात्राएँ पुस्तकें खरीदने में असमर्थ होती हैं तो वे पुस्तक अधिकोष से पूरे वर्ष के लिए पुस्तकें ले सकती हैं।

स.ठ. : पुस्तकालय में किन-किन वर्षों की छात्राओं को लाभ पहुँचता है?

रु.आ. : पुस्तकालय में हर वर्ष की छात्राओं को लाभ पहुँचता है, चाहे वे प्रथम वर्ष की हों, द्वितीय वर्ष की हों या फिर तृतीय वर्ष की। यह आवश्यक नहीं है कि पुस्तकालय में आकर छात्राएँ अपने विषय पर आधारित पुस्तकें ही पढ़ें, वे यहाँ कुछ भी पढ़ सकती हैं, जिसमें उनकी रुचि हो। पुस्तकालय में पुस्तकों का अनुरक्षण इतने अच्छे से किया गया है कि छात्राओं को कोई भी पुस्तक ढूँढने में कोई दिक्कत नहीं होती है। पुस्तकालय की प्रणाली ओपन एक्सेस प्रणाली है, किसी भी अलमारी में ताला नहीं है! इस प्रणाली के तहत छात्राओं का समय व्यर्थ होने से बचता है। पुस्तकालय से छात्राओं के साथ-साथ प्राध्यापकों को भी लाभ मिलता है।

स.ठ. : आपके अनुसार छात्राओं के लिए पुस्तकालय क्यों ज़रूरी है?

रु.आ. छात्राओं के लिए पुस्तकालय बहुत ज़रूरी है क्योंकि जब कोई छात्रा किसी भी परीक्षा या फिर प्रतियोगिता आधारित परीक्षा की तैयारी कर रही होती है तो एक पुस्तक में इतनी पठन सामग्री नहीं होती। परन्तु पुस्तकालय में बहुत सी पुस्तकें होती हैं, जिनसे छात्राओं को अधिक पठन सामग्री मिल जाती है, जिससे वे अच्छे से नोट्स बना लेती हैं और परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होती हैं। पुस्तकालय में रेफ़रेंस अनुभाग भी बहुत अच्छा है, जिसमें विश्वकोश है, पत्र - पत्रिकाएँ आदि हैं।

स. ठ. : एक अच्छा पुस्तकालय विकसित करने के लिए क्या अनिवार्य है ?

रु. आ. : एक अच्छा पुस्तकालय विकसित करने के लिए पुस्तकालय के अध्यक्ष का दयालु एवं सभ्य होना बहुत ज़रूरी है। यदि उसका व्यवहार छात्राओं के साथ कठोर हो तो वे अच्छा महसूस न करके असहज महसूस करती हैं, जिससे उन्हें पुस्तक के बारे में जानने में मुश्किलें आती हैं और वे अपने विषय के बारे में न जानकर असंतुष्ट हो जाती हैं। जब कोई छात्रा पुस्तकालय में आती है तो पुस्तकालय के अध्यक्ष का सबसे पहला कर्तव्य होता है कि वह छात्रा को संतुष्ट करें, जैसे कि आजकल अंकुरण (Digitization) का दौर चल रहा है वैसे ही हमारे कॉलेज का पुस्तकाल भी पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत है। हमारे पुस्तकालय में ई-कैटलॉग (e-catalogue) है, ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग (O-PAC) है और सबसे महत्वपूर्ण, इनफार्मेशन लाइब्रेरी नेटवर्क (INFLIBNET) भी है, जिसमें 6000 से अधिक पत्रिकाएँ मुफ्त उपलब्ध हैं और 750000 से अधिक पुस्तकें हैं जिन्हें छात्राएँ ऑनलाइन पढ़ सकती हैं। इससे छात्राएँ पुस्तकालय में ही नहीं, बल्कि अपने घर पर भी ऑनलाइन पढ़ सकती हैं।

स. ठ. : आपके अनुसार पुस्तकालय का छात्र-जीवन में क्या महत्त्व है?

रु. आ. : छात्र जीवन में पुस्तकालय का बहुत महत्त्व है, यह समय छात्राओं के सर्वांगीण विकास का समय होता है। जब छात्राएँ पुस्तकालय में आकर पढ़ाई करती हैं तो इससे छात्राओं का मानसिक विकास होता है, छात्राओं के ज्ञान में वृद्धि होती है, उनको अनुशासन के बारे में पता चलता है, जिससे छात्राएँ तेज़ी से प्रगति करती हैं।

स. ठ. : आपने पुस्तकालय के महत्त्व, उसकी विशेषताओं और उसकी उपयोगिता पर आज बहुत प्रासंगिक बातें कहीं, हमारा ज्ञान-चक्षु खोला, इसके लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ। आपने अपने कीमती समय में से कुछ पल निकालकर हमारा ज्ञानवर्धन किया, इसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद!

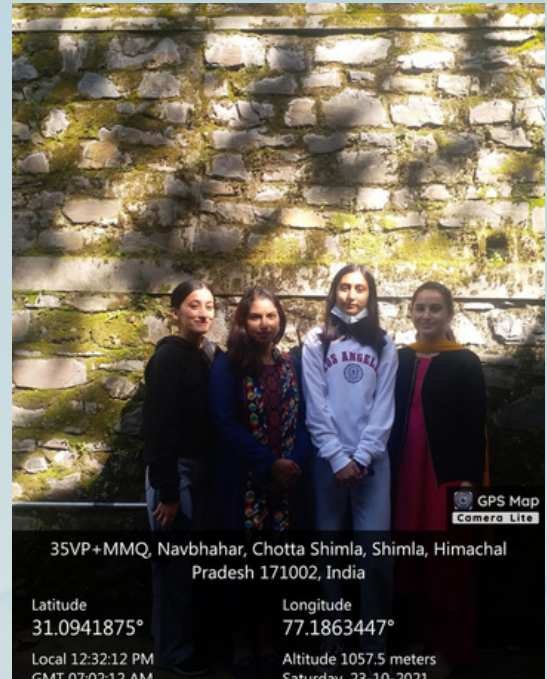
रु.आ. : आपका स्वागत है !



साक्षी ठाकुर
बी. ए तृतीय वर्ष
(जी.ई हिंदी)

विद्यार्थी परिषद् 2021-22

आज़ादी का अमृत महोत्सव 2021-23 के उपलक्ष्य में 'एक छात्र की दृष्टि में आज़ादी का महत्व' पर लेख प्रतियोगिता आयोजित। इसमें बी. ए तथा बीकॉम द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने भाग लिया।

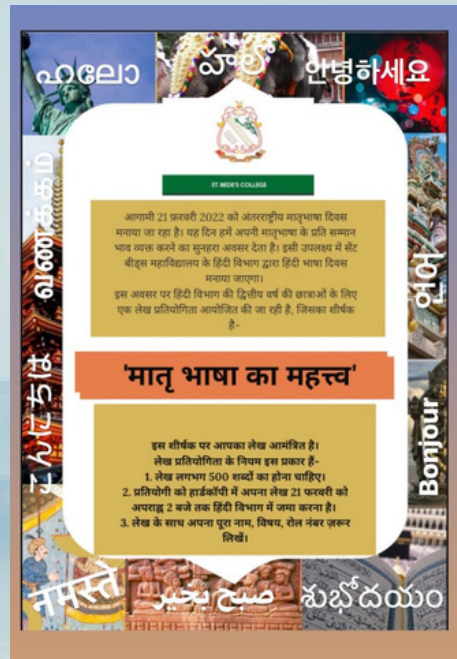
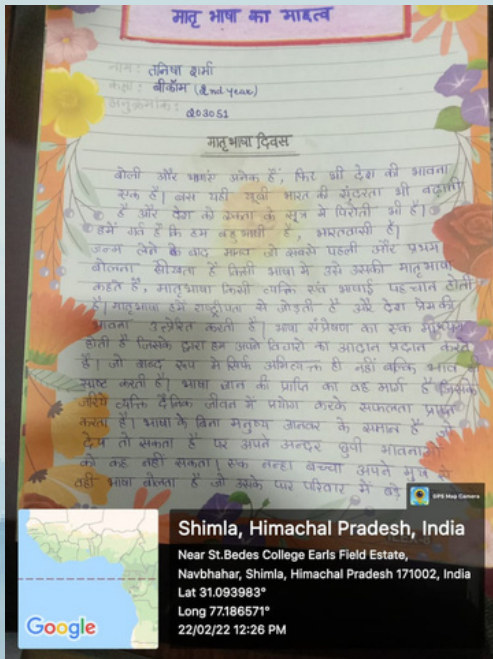


हिंदी दिवस 2021

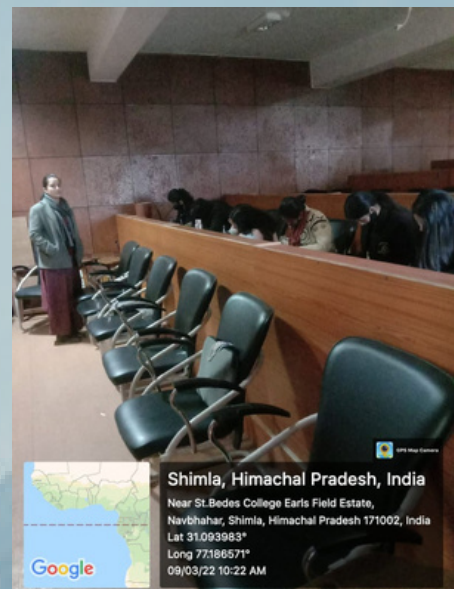


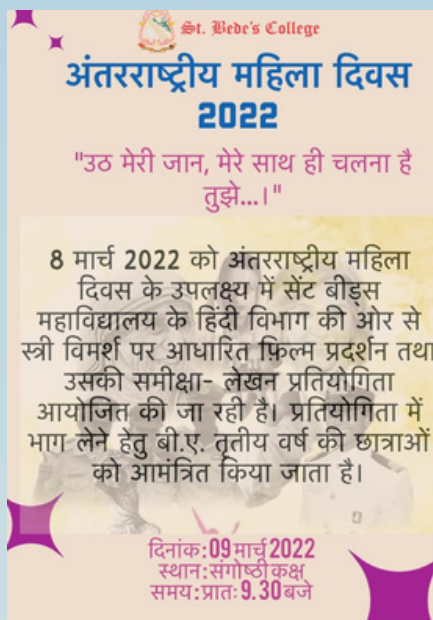


अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2022 के उपलक्ष्य में 'मातृभाषा का महत्व' पर लेख प्रतियोगिता आयोजित। इसमें बी. ए द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने भाग लिया।

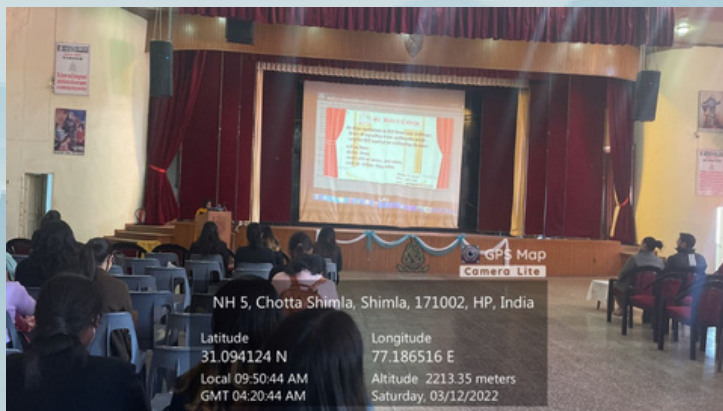


अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2022 के उपलक्ष्य में हिंदी विभाग की ओर से स्त्री विमर्श पर आधारित फ़िल्म प्रदर्शन तथा उसकी समीक्षा लेखन प्रतियोगिता आयोजित। इसमें बी. ए तृतीय वर्ष की छात्राओं ने भाग लिया।





'आधुनिक हिन्दी कहानियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण' - हिन्दी और मनोविज्ञान विभाग की सहभागिता में आयोजित अंतर्विभागीय संगोष्ठी। 12.03.22



वार्षिक दिवस 2021-22



द्वारा सिस्टर प्रोफ़ेसर मॉली अब्राहम, सेंट बीड्स कॉलेज शिमला - 171002

विभाग प्रधान सम्पादिका डॉ देविना अक्षयवर , सहायक सम्पादिका सुश्री अंजना देवी छात्र सम्पादिका सुश्री तन्वी अग्रवाल, छात्र सह - सम्पादिका सुश्री शिखा शांडिल